Online at: https://researchtrendsjournal.com ISSN No: 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 4; 2024; Page No. 01-03

Received: 01-04-2024
Accepted: 09-05-2024

लखनऊ की संगीत परम्परा में भातरखण्डे संगीत विद्यापीठ

डॉ. पंकज उप्रेती

प्रभारी संगीत विभाग, राजकीय महाविद्यालय टनकपुर, जिला चम्पावत, उत्तराखण्ड, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.12684210

Corresponding Author: डॉ. पंकज उप्रेती

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत लखनऊ शहर का पर्याय है। अपनी साहित्यिक विरासत के लिए मशहूर लखनऊ भातखंडे संगीत की परंपरा को पोषित करने और संरक्षित करने में अहम भूमिका निभाता रहा है। पंडित विष्णु नारायण भातखंडे द्वारा स्थापित भातखंडे संगीत संस्थान ने भारतीय संगीत को आकार देने और उसे सुरक्षित रखने की नींव रखी। विश्वविद्यालय के रूप में विकसित होने के बावजूद, इसका सार पुरानी और नई दोनों यादों में निहित है, जो वैश्विक स्तर पर गूंजती रहती हैं।

मूलशब्द: लखनऊ, भातखंडे संगीत संस्थान, भारतीय शास्त्रीय संगीत, सांस्कृतिक विरासत, संगीत परंपरा

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत का उल्लेख होते ही लखनऊ काा उल्लेख मुख्य रूप से होता है। अदब के शहर लखनऊ की संगीत परम्परा में भातखण्डे संगीत विद्यापीठ का योगदान बुनियाद का पत्थर ही है, जिसने हमारे संगीत को संवारा और उस्तादों को संरक्षण दिया। वर्तमान में भले ही शिक्षा की रीति में भातखण्डे सम विश्वविद्यालय का रूप ले चुका है लेकिन इसकी बुनियाद पं.बिष्णुनारायण भातरखण्डे के बोए बीज विद्यापीठ के रूप में है। आज भी इसकी नई–पुरानी यादों के साथ दुनिया में चर्चा होती है। आसुफद्दौला ने लखनऊ को अवध की राजधानी बनाया उसी समय से यह सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विकसित होता रहा। 18वीं शदी से 20वीं शदी तक भारत के विभिन्न हिसों से कलाकार लखनऊ आकर बस गये और अपनी कला के चरम को जिया। बाजिदअली शाह के राज्यकाल में ठुमरी, दादरा, गजल, मर्सिया, सोजखानी, कथक नृत्य और तबला को विशेष राज्याश्रय मिला। ऐसे में प्रसिद्ध ख्यालिये ग्वालियर चले गये।

ठाकुर जयदेव सिंह कहते हैं– 'जिसे लोग ख्याल का ग्वालियर घराना कहते हैं, वह वास्तव में लखनऊ घराना है। यह सच है कि वह ग्वालियर जाकर पनपा, वहीं पर ख्यालियों के वंशज ने उनकी शिक्षा योग्य शिष्यों को दी, वहीं ख्याल का प्रचार और प्रसार हुआ, किन्तु वह गया लखनऊ से ही।'[1] केसरबाग में राजा महमूदाबाद के हाउस में भातखण्डे संगीत विद्यापीठ स्थापित है।[2] जिसमें विद्यापीठ के लिये दो कक्ष दिये गये। इससे लगा हुआ है– 'परी महल'। अवध के अन्तिम शासक नवाब बाजिद अली शाह ने केशरबाग के मध्य इमारतें बनवाई। इसी में से 'परी खाना' में भातखण्डे कालेज खोला गया।[3] चतुर सुजान याने पं. भातरखण्डे के सबसे गुणी शिष्य पं.श्रीकृष्ण नारायण रतंजनकर ने मैरिस म्यूजिक कालेज के नाम से पहचान रखने वाले इस संस्थान का जम जमाव किया। इसके बाद पं.गोविन्द नारायण नातू इसके प्राचार्य के रूप में इसकी ख्याति को आगे करते रहे। गुणीजनों, गुरुजनों की संगत में गायन, वादन, नृत्य का अद्भुत संगम भारतखण्डे रहा है। भातखण्डे की शिष्य परम्परा से जुड़े विद्वान भी इसमें योगदान देते रहे।[4]

इसके इतिहास पर जाएं तो पता चलता है 1926 में चार लोगों ने मिलकर इस संस्थान को बनाया।[4] इसमें पं. विष्णुनारायण भातखण्डे, राय उमानाथ बली, राय राजेश्वर बली और नबाब अली शाह थे। 1936 में इसे परीक्षा का बोर्ड बनाया गया, 1966 तक यह व्यवस्था चली। राजा महमूदाबाद ने संगीत विद्यालय संचालन के जिस प्रकार से योगदान दिया वह हमेशा याद किया जायेगा। सरकार द्वारा 1966 में शिक्षण व्यवस्था अपने हाथ में ले ली गई लेकिन सन् 2000 तक भातखण्डे संगीत विद्यापीठ परीक्षा संचालित करती रही।[5] विद्यापीठ की यह व्यवस्था आज भी लागू है यद्यपि भातखण्डे सम विश्वविद्यालय बनने के बाद से इसका प्रभाव पहले जैसा नहीं रहा है। बली जी के पौते श्रीमान संजय बली विद्यापीठ के चैयरमैन हैं। यह बड़ा सत्य है कि प्राथमिक से लेकर उच्चशिक्षा तक संगीत के लिये चाहे किसी प्रकार की

व्यवस्था सरकार ने कर दी हो, यूजीसी व अन्य एजेंसियों के मानक बने हों लेकिन भातखण्डे विद्यापीठ ने जिस प्रकार की नींव डाली वह इसी में सम्भव थी। संगीत और ललित कलाओं से जुड़ी अन्य विधाओं को सीखने–समझने के लिये विद्यापीठ जैसी व्यवस्था ही कारगर हो सकती है।[6] संगीत कला से जुड़े विद्वान व जानकारों की मान्यता है कि कलाओं का मामला किसी कक्षा के तय समय में बन्धन ही है। मीरा माथुर जी का मत है– 'संगीत की परम्परा में इस प्रकार के संस्थान ही ठोस कार्य कर सकते हैं, जिसमें गुरुजन और गुणीजनों की साधना होती है।'[7]

सांस्कृतिक केन्द्र के रूप में विख्यात लखनऊ में भातखण्डे जी ने शिक्षा के जिस बीज को बोया वह वह पल्लवित है क्योंकि नवाबों ने अवध की राजधानी का जिस तरह साज–श्रृंगार किया वह यहाँ रचा–बसा है। उदार संरक्षक व कलाप्रेमी नवाबों के समय से ही लखनऊ में बेहतरीन मंचीय व दरबारी प्रदर्शन होते रहे हैं। सम्राट मुहम्मद शाह के दरबारी संगीतकारों ने यहाँ अनेक कला–प्रदर्शन किये। यही शोरी मियां ने उपशास्त्रीय संगीत की अभूतपूर्व उपलब्धि 'टप्पा' का अविष्कार किया। वे लखनऊ के ही निवासी थे। तानसेन के उत्तराधिकारी हैदर खान, प्यारे खान और बशीर खान यहीं रहे और उन्होंने अनेक शिष्यों को संगीत शिक्षा दी।[8] भातखण्डे जी ने संगीत का केन्द्र बनाते हुए बीते गौरव को लौटाया और आधुनिक संगीत सम्मेलनों के अवध की राजनधानी को चुना। हिन्दुस्तानी संगीत के रहस्यभरे सवालों को सुलझाने व इन पर चर्चा के लिये जितना वमर्श लखनऊ में हुआ उससे यह भी सिद्ध होता है कि लखनऊ की संगीत परम्परा में प्रदर्शन के अलावा पठन–पाठन को भी महत्व दिया गया है। भातखण्डे जी स्वयं ही प्रकाण्ड विद्वान थे जिन्होंने स्वरलिपि पद्धति के अलावा संगीत की जिज्ञासायों पर कलम चलाई। राजा नवाब अली का संगीत के प्रति कितना लगाव था यह बात उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'मारिफुन्नगमात' से पता चलती है।

आकृति 1: नवाब बाजिद अली शाह

आकृति 2: महाराज बिन्दादीन

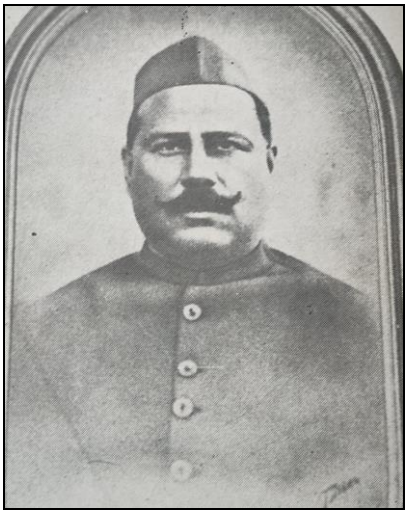

आकृति 3: राजा नबाब अली खा

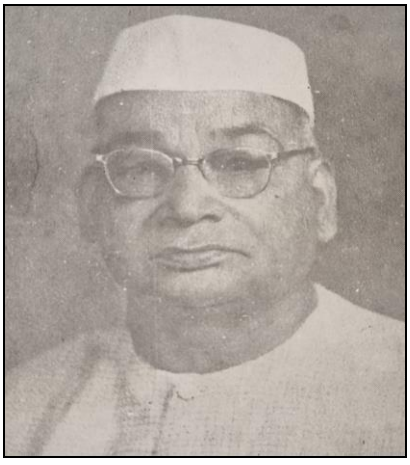

आकृति 4: राय उमानाथ बली

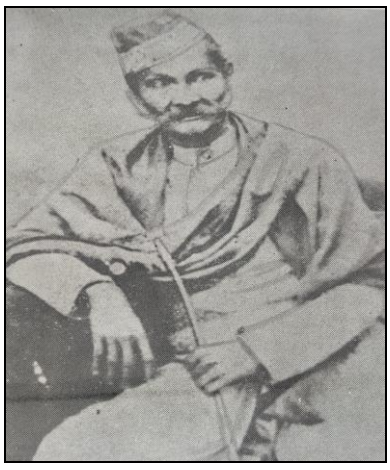

आकृति 5: उस्ताद सादिक अली खाँ

लखनऊ की संगीत परम्परा में ख्याल–गायकी की बात करें तो पता चलता है ग्वालियर घराने से पहले कई कलावन्त का मूल स्थान लखनऊ ही था। नत्थन पीर बख्श, उनके सुपुत्र कादिर बक्श और पोते हस्सू और हद्दू खाँ यहीं के मूल वाशिन्दे थे। सुशीला मिश्रा अपने अध्ययन में बताती हैं– 'नवाबों के जमाने में ख्याति प्राप्त करेने वाले बहुत से बड़े ख्यालिए लखनऊ में थे। जैसे– सूरज और चाँद खाँ, नसीर अहमद, अमीर अली, मुराद अली, सुलेमान, गुलाम रसूल, बाज बहादुर, चंचल सेन, सादिक अली खाँ, खुर्शीद अली और अन्य अनेक तवायफ गायिकाएं। जब दिल्ली और अन्य अन्य दूसरी जगहों से संगीतकार लखनऊ आए तो वे अपने साथ ध्रुपद, धमार और कब्बाली भी ले जाए।[9] लखनऊ के उस्ताद मुहम्मद खाँ के भतीजे उस्ताद यूसुफ खाँ और बजीर खाँ होरी, धमार, ख्याल, टपपा, गजलों के गायक थे। ठाकुर नवाब अली ने बाँदा में इन्हें सुना और प्रभावित होकर

लखनऊ ले आए और पुरस्कार, अशफियाँ भेंट की। इस पूरे सफर में प्रतिष्ठित कलाकार जुड़ते रहे हैं लेकिन उस्ताद खुर्शीद खाँ को इस घराने का पितामह कहा गया। 105 वर्ष की उम्र में 1950 में इनकी मृत्यु हुई। संगीत जगत को आजीवन संवारने वाले इस उस्ताद को हमेशा याद किया जायेगा।

ठुमरी की पृष्ठभूमि में यदि लखनऊ को देखें तो स्पष्ट हो जाता है कि राग–रागनियों की जकड़न से मुक्ति और सौन्दर्य–बोध की वृहत्तर सन्तुष्टि के लिये इसने लखनऊ में जन्म लिया। अवध के अन्तिम शासक के दरबार में प्रतिष्ठित संगीतज्ञ सादिक अली और उस्ताद गुलाम नबी को ठुमरी के लिये श्रेय दिया जाता है परन्तु यह बात सर्वसम्मत है कि बाजिद अली शाह के संरक्षण में ही यह सब सम्भव हो पाया। आज भी केशरबाग स्थित बारादरी को इसके लिये जाना जाता है। बाजिद अली शाह का दरबार संगीत और नृत्य का सबसे बड़ा केन्द्र था। स्वयं बाजिद अली कलाकारों के बीच ठुमरी की कोमलता को देख नृत्य के लिये उठ खड़े होते। आचार्य चन्द्रशेखर पन्त कहते हैं– 'ठुमरी की भाषा न उर्दू थी न फारसी, बल्कि इस क्षेत्र की हिन्दी थी। यह भाषा ब्रजभाषा, लखनऊ के क्षेत्र की अपनी भाषा और पूरबी भाषा का अद्भुत सम्मिश्रण थी।'[10] कथक में भाव पक्ष के साथ जिस प्रकार की बनावट ठुमरी में होती है वह लखनऊ दरबार की खास बात रही है। बाजिद अली शाह ने ठुमरियों की रचना भी की। 'बाबुल मोरा नैहर छूटो जाय' का उदाहरण ही देखा जाए, जो उन्हें अमर बनाता है। बड़े उस्तादों से लेकर फिल्मी संगीत में इस ठुमरी की धूम रही है। पं.भातखण्डे ने बाजिद अली शाह 'अख्तरपिया', कदरपिया, सनदपिया, हररंग, ऐसे ही अनेक रचनाकारों की ठुमरियों की स्वरलिपि बनाकर संगीत जगत को अमूल्य धरोहर सौंपी। लखनऊ की ठुमरियों के विशाल भण्डार में विन्दादीन की ठुमरियों का नशा वर्तमान में भी मंचों पर दिखाई देता है। डॉ. सुशीला मिश्रा ने लिखा है– 'महान कृष्ण भक्त नर्तक विन्दादीन ने ऐसी हजारों काव्यात्मक ठुमरियों की रचना की जो कथक भावाभिनय के अनुकूल हैं। कथक में उनका वहीं स्थान है जो भरतनाट्यम में 'पदम्' का होता है।'[11] लखनऊ तो वैसे भी कालका–बिन्दा के घराने के लिये जाना जाता है। वाकेई इस परम्परा से महान कलाकार शम्भू महाराज, लच्छू महाराज, अच्छन महाराज, सुखदेव महाराज, बिरजू महाराज, सितारा देवी रहे हैं। मैरिस म्यूजिक कालेज/भातरखण्डे संगीत संस्थान में कथक की इसी लीक की शुभारम्भ हुआ। आज भी लखनऊ के कथक नृत्य की जो शैली है, उसके बाद भाव नृत्य में खासकर विन्दादीन महाराज की रचनाओं को देखा जा सकता है। इसी भातखण्डे विद्यापीठ में मूल रूप से अल्मोड़ा की पूर्णिमा पाण्डे जी नृत्य विभाग में रहीं। उन्होंने कुलपति के रूप में भातखण्डे संस्थान को संवारा।[12] काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी में कथक विभाग की विधि नागर सहित तमाम शिष्य इस महक को फैला रहे हैं।

गायन में ख्याल की गुरु–गम्भीर स्थिति व अनुशासन को लचीला बनाते हुए लखनऊ में ठुमरी पनपी और इसे राजाश्रय भी प्राप्त हुआ। कला और कलाकारों की लम्बी सूची में लखनऊ का तबला घराना भी है। उस्ताद मम्मन खाँ, उनके सुपुत्र मुन्ने खाँ और उस्ताद आबिद हुसैन, मुन्ने खाँ के बेटे बाजिद हुसैन और पोते आफाक हुसैन इस घराने के रू॰ में प्रतिष्ठित है। आफाक हुसैन के पुत्र इल्मास हुसैन वर्तमान में घराने के प्रतिनिधि कलाकार हैं। घराने के प्रसिद्ध तबला वादकों में वीरू मिश्र, हीरेन्द्र गांगुली, जहांगीर खाँ, महबूब खाँ, छुट्टन खाँ, देवी प्रसन्ना घोष रहे हैं। लखनऊ में भावपूर्ण ठुमरी गायन के व नृत्य की बारीकियों की संगत में तबले की संगत भी इसी प्रकार विकसित होती रही। बाजिद हुसैन की तबला तालीम उनके पिता उस्ताद मुहम्मद खाँ और भाई मुन्ने खाँ से हुई। ख्यातिप्राप्त तबलिये बाजिद हुसैन भातखण्डे संगीत महाविद्यालय/संस्थान में भी तबला गुरु के रूप में रहे हैं। उन्हें सम्मानपूर्वक 'खलीफा' कहा जाता था।

इस प्रकार हम देखते हैं कि हिन्दुस्तानी संगीत की नींव में लखनऊ का योगदान सर्वोच्च है और भातखण्डे संगीत विद्यापीठ/महाविद्यालय/संस्थान/विश्वविद्यालय चाहे जो कुछ नाम से चर्चा हो जाए, इसका खासा महत्व है। यह सच भी है कि शास्त्रीय संगीत की जिस धारा को दुनिया में जाना जाता है, उसमें भातरखण्डे जैसी बुनियाद ही कारगर है। विद्यापीठ की व्यवस्था को संरक्षित करने के लिये और कार्य होने चाहिये ताकि ललित कलाओं में श्रेष्ठ संगीत का प्रभाव समाज को सही दिशा में बनाए रखेगा। संगीत सिर्फ इसलिये जरूरी नहीं है कि कोई इसे सुनकर–सीखकर संगीतकार बन जाए, यह सामाजिक अनुशासन बनाने वाला विषय है। प्रत्येक विषय से जुड़े लोग इससे प्रभावित होकर संगीत के रहस्य को जानना चाहते हैं।

सन्दर्भ

1. लखनऊ की संगीत पम्परा, सुशीला मिश्रा, उ.प्र.संगीत नाटक अकादमी, प्रकाशक वि.श्रीखण्डे सचिव, अकादमी, प्रथम संस्करण 1984 की भूमिका में ठाकुर जयदेव सिंह के विचार।
2. पिघलता हिमालय यूट्ब चैनल में भातखंडे संगीत विद्यापीठ लखनऊ वीडियो https://youtu.be/giDHT8wqs2Q?si=QW4aVsG9j-N3uhRw
3. लेखक ने इसी विद्यापीठ से 1997 में गायन से संगीत निपुण किया था। तीन साल की निपुण परीक्षा में गिने–चुने विद्यार्थी होते थे और प्रतिवर्ष जाने–माने गुरुजन परीक्षक के रूप में पधारते रहे हैं।
4. प्रो.प्रेम सिंह किन्नोत भी इसी परम्परा के वाहक थे जो लेखक के गुरु रहे हैं।
5. पिघलता हिमालय यूट्ब चैनल में भातखंडे संगीत विद्यापीठ लखनऊ वीडियो https://youtu.be/giDHT8wqs2Q?si=QW4aVsG9j-N3uhRw
6. गुरुवर प्रो.प्रेम सिंह किन्नोत से हुई वार्ता के आधार पर।
7. भातखण्डे संगीत विद्यापीठ की रजिस्ट्रार मीरा माथुर का 20 मई 2024 को असामयिक निधन हो गया।
8. लखनऊ की संगीत पम्परा, सुशीला मिश्रा, उ.प्र.संगीत नाटक अकादमी, प्रकाशक वि.श्रीखण्डे सचिव, अकादमी, प्रथम संस्करण 1984 की प्रस्तावना
9. वही, पृष्ठ 2
10. वही, पृष्ठ 12
11. वही, पृष्ठ 15
12. श्रीमती पूर्णिमा पाण्डे (पूर्णिमा दीदी) के साथ लेखक व परिवार की निकटता है। भातखण्डे हिन्दुस्तानी संगीत महाविद्यालय द्वारा 1996 में रानीखेत में आयोजित अल्पकालीन संगीत प्रशिक्षण शिविर में पूर्णिमा जी के साथ लेखक ने योगदान दिया था। इसके बाद जब भातखण्डे की अल्मोड़ा शाखा में गायन पद के लिये लेखक और तबले के लिये अनजु श्री धीरज उप्रेती का चयन प्रक्रिया हो चुकी थी लेकिन उन दौरान उत्तर प्रदेश से पृथक होकर उत्तराखण्ड राज्य बन गया और वह प्रक्रिया वहीं रुक गई थी। तब डॉ. रमेश पोखरियाल 'निशंक' उ.प्र.सरकार में धर्मस्व व संस्कृति मंत्री थे।

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.